।। हिपोक्रसी,डिपाक्रट विषय पर संगोष्ठी का अयोजन ।।

इंदौर/ इण्डियन सोसायटी आफ आथर्स ;इंसाद्ध इंदौर चैप्टर द्वारा अपने मासिक साहित्यिक कार्यक्रम के अर्न्तगत् दिनांक 26.03.2011 को कुन्दकुन्दज्ञानपीठ के सभागार में हिपोक्रसी,डिपाक्रट विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया ।संगोष्ठी के मुख्य वक्ता डां.एम.सी.नाहटा ने कहा कि हिपोक्रसी शब्द का सामान्य रूप् से अर्थ ढोग,मिथ्या या पाखण्ड है। हिपाक्रेट कपटी/ पाखण्डी का चरित्र भी विचित्र होता है जो हमेशा अस्त–व्यस्त रहकार दूसरों को षणयन्त्रपूर्वक धोखा देने की योजना बनाने में व्यस्त रहता है । इनका मन भ्रष्टाचारी होता है।हिपोक्रसी को एक बीमारी या अपराध की संज्ञा दी जा सकती है।हमारे सामने महत्वपूर्ण प्रश्न है कि क्या हम इस तथाकथित बीमारी से छुटकारा पा सकते है–यदि हां तो कैसे? वैसे तो इसका उत्तर देना कठिन दिखता है तथा उपाय बताना भी उतना कठिन है किन्तु राजनीति का शुद्धिकरण,सन्त महात्माओं के उपदेश,धर्म तथा धार्मिक मान्यताओं में विश्वास में वृद्धि तथा वरिष्ठ नागरिकों तथा महिलाओ स्वयंसेवी संगठनों द्वारा सामजिक चेतना में वृद्धि के प्रयास इसको शनैः शनैः दूर कर सकते है–केवल आशा तथा सफलता की कामना ही की जा सकती है। वरिष्ठ साहित्यकार डां.के.एस.रावत ने उक्त विषय पर अपने विचार प्रगट करते हुए कहा कि हिपोक्रसी पाखण्ड है। हिपोक्रेट अपने को सर्वश्रेष्ठ साबित करने में लगा रहता है,भले ही इससे दूसरे व्यक्ति का अपमान हो अथवा हानि। श्री नन्दलाल भारती ने कहा कि भारतीय जाति–व्यवस्था हिपोक्रेसी और हिपोक्रेट को बढावा देती है इसका भयावह उदाहरण वर्तमान समय में देखने को मिल जाता हैं जो देश और समाज के लिये लाभकारी नही कहा जा सकता है । वरिष्ठ लघुकथाकार श्री सुरेश शर्मा ने भी उक्त विषय पर अपने विचार श्रोताओं के सम्मुख रखे।इस संगोष्ठी डां.अजीतकुमारसिंह कासलीवाल,डां.के.एस.रावत,वाई.के. गुप्ता,नयन राठी एवं वरिष्ठ लघुकथाकार श्री सुरेश शर्मा सहित साहित्यकार एवं श्रोतागण उपस्थित थे।कार्यक्रम का संचालन श्री नन्दलाल भारती ने किया तथा आभार श्री एस.एच.पिठवे ने माना ।

सचिव

स्थान–इंदौर
दिनांक 26.03.2011